B.A III

धार्मिक चेतना V paper

धर्म में ईश्वर का महत्वपूर्ण स्थान है। ईश्वर ही धर्म का आधार है। धार्मिक चेतना का विश्लेषण करने के उपरान्त विदित होता है कि धार्मिक रूप से मानव का व्यवहार धर्म की खोज है धार्मिक चेतना का अध्ययन धर्म दर्शन में होता है। साधारणतः चेतना शब्द का अर्थ ज्ञान होता है परन्तु यह चेतना का संकीर्ण प्रयोग है आधुनिक मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मन के तीन पहलु हैं विचार, भावना, और इच्छा। जे. एम. ल्यूबा ने मन के इस स्वरूप के सम्बन्ध में कहा है कि चेतन जीवन की कोई न विचार, न भाव, न इच्छा अपितु किसी वस्तु के प्रति तीनों संश्लिष्ट गति है।

धार्मिक चेतना के तीन पहलू हैं (1) ज्ञानात्मक (2) भावनात्मक (3) क्रियात्मक

ज्ञानात्मक पहलू धर्म का वह पहलु है जो मानव को किसी शक्ति के प्रति चेतनशील बनाता है। भावनात्मक वह पहलू है जो मानव में उस सत्ता के प्रति प्रेम आत्म समर्पण तथा निर्भरता का भाव फूंकता है। साथ ही क्रियात्मक पहलू मानव को शक्ति के प्रति क्रियाशील बनाता है। मानव अपने कर्मों के द्वारा उस सत्ता को प्रसन्न करने का प्रयास करता है जिसके फलस्वरूप क्रिया पद्धति का विकास होता है।

मानव एक विवेकशील प्राणी है। मानव के पास अस्तित्व तथा हृदय है। मानव की कल्पना मशीन से नहीं की जा सकती। जब भी मानव कोई कर्म करता है तब उसके बारे में विचार करता है। कर्म करने के पूर्व उसके कर्म लक्ष्य, सीमा, लाभ- इत्यादि विषय पर चिन्तन करता है। धर्म के लिए तीनों पहलू अनिवार्य है। धर्म सम्पूर्ण मानव की प्रतिक्रिया है अतः धर्म के तीनों पहलू का उचित स्थान देना आवश्यक है।

धर्म का आधार मात्र ज्ञान है इसलिए धार्मिक चेतना ज्ञान पर ही आधारित है। हीगेल, शंकर, ब्रैडले, आदि इस मत के पोषक है इन्होंने तर्कों के ज्ञानात्मक पहलू का ही महत्व दिया।

मनुष्य ही धार्मिक होता है, मानव विवेकशील जीव है जो उसे धार्मिक बना देता है। पशुओं में विवेक का अभाव है। भले ही भावनाओं समान है पशु भी मानव की तरह सुख और दुख पीड़ा महसूस करते है लेकिन विवेकशून्य होने के कारण पशु में धार्मिकता का अभाव है इस लिए धार्मिक चेतना में ज्ञान की अहम भूमिका है।

अतः हम कह सकते है कि धर्म का आधार न सिर्फ ज्ञान न सिर्फ भावना और न सिर्फ भावना ही है हम कह सकते है तो इसमें तीनों का समन्वय है जिस प्रकार विचार भाव और संकल्प मन के तीन अंग है ठीक उसी प्रकार धार्मिक चेतना के तीन अंग है और तीनों ही पूरक है किसी एक को ग्रहण करना तथा दूसरे को उपेक्षा करना गलत है।

धर्म मानव की सभी समस्याओं का हल खोजने का प्रयास करता है। सामाजिक और राजनैतिक सम्बन्धों के बाद जब मानव अपने को असहाय समझता है तब धर्म असहाय और शक्तिहीन मानव को शक्ति प्रदान करता है। धर्म विश्वासों को जन्म देता है।

प्रो० मैक्स मूलर ने कहा है कि धर्म का इतिहास मानव के विकास का इतिहास है। अतः धार्मिक चेतना की व्याख्या करके सम्पूर्ण धर्म का सम्पूर्ण मानव-जाति से गहरा सम्बन्ध होता है।

धार्मिक चेतना के अध्ययन के उपरान्त ऐसा लगता है कि इसके लिए तीन आवश्यक तत्त्व — बुद्धि, अनुभव और क्रिया का होना अत्यन्त आवश्यक है। इनमें से किसी एक के अभाव में धार्मिक चेतना का होना असम्भव है और इसी प्रकार सभी धर्म ~~[illegible]~~ दार्शनिकों इसकी महत्ता स्वीकार की है। परन्तु डॉ० ओटो सभी दार्शनिकों से भिन्न ~~[illegible]~~ दार्शनिक चेतना की व्याख्या अलग किया है उसने धार्मिक चेतना के लिए अबौद्धिक (Non-rational) तत्त्व को एक मात्र आधार माना है।